इकाई 6 अभिजन वर्ग, शासक वर्ग और जनसमूह*

इकाई की संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 परिभाषा : अभिजन बनाम समूह

6.2.1 अभिजनों के प्रकार

- शासक अभिजन
- आर्थिक अभिजन
- शक्तिशाली अभिजन

6.3 संस्कृति : अभिजन वर्ग की सामाजिक प्रस्थिति का एक चिन्हक

6.4 सामाजिक संजाल और ज्ञान : अभिजन वर्ग का संरक्षण

6.5 सामाजिक संस्थाएँ : अभिजनों का पुनरुत्पादन

6.6 सारांश

6.7 शब्दावली

6.8 उपयोगी पुस्तकें

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच के अंतर को समझ सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के अभिजन वर्गों का वर्णन कर सकेंगे;
- अभिजन वर्ग को बनाए रखने में संस्कृति, सामाजिक संजाल और ज्ञान की भूमिका का अन्वेषण कर सकेंगे; और
- अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका को समझा सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाई में हमने सरकार, शासन और शासकीयता को देखा। इस इकाई में हम अभिजन वर्ग, शासक वर्ग और जनसमूह की चर्चा करेंगे। हम अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच अंतर को इंगित करते हुए इस इकाई की शुरुआत करेंगे। इसके पश्चात् हम विभिन्न प्रकार के अभिजन वर्गों और अभिजन वर्ग को बनाए रखने में संस्कृति, सामाजिक संजाल और ज्ञान की भूमिका पर चर्चा करेंगे। तत्पश्चात हम अभिजन वर्ग के

* गीतांजली अत्री द्वारा लिखित।

पुनरुत्पादन में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका की व्याख्या करेंगे। दुनिया का हर समाज मोटे तौर पर दो समूहों में विभाजित है। जिनमें से एक समूह, छोटा है परंतु फिर भी अधिकतम संसाधनों को नियंत्रित करता है और शक्ति के सामाजिक संबंधों में प्रभावी स्थान रखता है। ये अभिजन हैं। और अन्य, बहुसंख्यक है फिर भी कोई शक्ति नहीं रखते है। ये जनसमूह हैं। तदनुसार, जबकि 'अभिजन सिद्धांत' के प्रारंभिक विचारकों द्वारा जनसमूह को अक्षम और निष्क्रिय के रूप में समझा जाता है, इसके विपरीत अभिजनों को रचनात्मक और अपरिहार्य के रूप में देखा जाता है। यह समझ एक दो–स्तरीय योजना पर आधारित है – शासक अल्पसंख्यक बनाम शासित बहुसंख्यक।

यद्धपि अभिजन वर्ग समाज की विभिन्न कड़ियों से संबंधित हो सकता है, चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा या यहां तक कि धर्म ही क्यों ना हो; वे किसी भी क्षेत्र में प्रभुत्व की स्थिति पर अधिकार बनाए रखते हैं। हालांकि, आधुनिकता के आगमन के साथ, सामाजिक संजाल और संस्थानों आदि जैसे अधिक से अधिक कारकों को अभिजन वर्ग के संरक्षण के दायरे में जोड़ा गया है। लेकिन यह कहा गया है कि अभिजन वर्ग प्रदत्त समूहों के रूप में ही सीमित नहीं है, बल्कि योग्यता के द्वारा इसमें अतिक्रमण किया जा सकता है। इस प्रकार, यह बहस और अधिक गतिशील बन जाती है।

6.2 परिभाषा : अभिजन बनाम जनसमूह

इस खंड में हम अभिजन वर्ग को परिभाषित करेंगे। अभिजनों या जनसमूह– इन दोनों की कोई एकवचनीय परिभाषा नहीं रही है – हालाँकि, इन दो अवधारणाओं के विषय में विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए जो सामान्य रहता है वह यह है कि एक को हमेशा दूसरे के पूरक के रूप में समझा जाता है। 'अभिजनवाद' के उत्कृष्ट विचारक गेटानो मोस्का और रॉबर्ट मिशेल एक संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार, शासक वर्ग की संख्यात्मक लघुता उनके पक्ष में काम करती है क्योंकि वे अनगिनत बहुसंख्यकों की तुलना में कार्यों और हितों के समन्वय के लिए व्यवस्थित करने में आसान होते हैं, जो कि उनकी अक्षमता के कारण व्यवस्थित करना बहुत कठिन है।

लेकिन अभिजन वर्ग का सिद्धांत उनके पूर्ववर्ती विलफ्रेडो पेरेटोकी विद्वत्ता से सबसे महत्वपूर्ण रूप से ग्रहण करता है। उनकी पुस्तक *द माइंड एंड सोसाइटी* (1935), अभिजन वर्ग के भीतर मौजूद भेदों के वर्णन द्वारा इस बहस में योगदान करती है। इसमें वे कहते हैं कि, सार्वभौमिक रूप से, विभिन्न समाज ना केवल उनके जन्मजात गुणों के कारण अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच विभाजित है, अपितु अभिजनों की श्रेणी भी इससे और आगे बढ़कर शासक और गैर–शासक अभिजन वर्ग के बीच विभाजित अंतर है। उन्होंने इस शासक अभिजन, गैर–शासक अभिजन और गैर–अभिजन के बीच त्रिपक्षीय पर इस मान्यता को आधार बनाया कि किसी भी समाज में व्यक्ति अपने गुणों में असमान होते हैं, तथापि नए सदस्य उनकी अपनी उपलब्धियों और योग्यता के आधार पर जनसमूह में से अपना मार्ग बना कर अभिजन वर्ग के स्तर में शामिल हो सकते हैं।

अपने तर्कों को आगे बढ़ाते हुए, सी. राइट मिल्स अपनी पुस्तक *इन द पावर इलीट* (1956) में अमरीकी शक्ति संरचना में बहस के लिए शर्तें तय कीं। वह अमेरिकी समाज को तीन स्तरों में व्यवस्थित करते हैं– शक्तिशाली अभिजन, जिसमें सैन्य, निगमित और राजनीतिक नेतृत्व निहित है; मध्यम स्तर जिसमें स्थानीय या क्षेत्रीय अभिजन, कांग्रेस के सदस्य और अन्य संगठित समूह शामिल हैं; और असंगठित जनसमूह। अभिजन वर्ग के व्यक्तियों में सामाजिक आधार समान होता है और वे गैर–अभिजन वर्ग या जनसमूह से गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए अपने संबंध बनाए रखते हैं। मिल्स के लिए, अभिजन एक

जोड़नेवाली इकाई की तरह काम करते हैं, जिसमें वे एक दूसरे को स्वीकार करते हैं और समझते हैं, और यहां तक कि एक जैसा सोचते हैं। इसलिए, मिल्स के अनुसार सत्ता संस्थानों में निहित होती है, न कि व्यक्तियों के में। यहां तक कि जनसमूह अपनी प्रतिभाओं के द्वारा प्रेरित होकर ऐसी संस्थाओं में शामिल हो सकती है, जब तक कि यह संस्था की शक्ति को अस्थिर नहीं करती है। पेरेटो और मिल्स से विचारधारा ने जी. विलियम डोमहॉफ में एक और प्रस्तावक को देखा। उनका कार्य *हू रिअली रूल्स?* (1978) अभिजन संस्थानों के भीतर गतिशीलता के तंत्र के रूप में अभिजन संस्थानों में शिक्षा और सदस्यता के द्वारा सह–चयन पर चर्चा करता है।

इस प्रकार, प्रारंभ में अभिजन और जनसमूह को सामाजिक वर्णक्रम के दो दूरस्थ छोर के रूप में समझा जाता था, क्रमशः इन्हें बिना किसी निश्चित सीमाओं के घुलने–मिलने वाली श्रेणियों के रूप में देखा गया। जबकि जनसमूह शासित और असंगठित बहुसंख्य बना हुआ है, व्यक्तिगत योग्यता को अभिजन स्तर में उनकी गतिशीलता की संभावनाओं के केंद्र में रखा गया है।

सोचें और करें 1

उन विचारकों की, उनके योगदान के वर्षों के साथ एक सूची बनाएं जिन्होंने अभिजात्य वर्ग बनाम जनसमूह के प्रत्येक पहलुओं पर बहस में योगदान दिया और देखें कि किस प्रकार इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर बहस आगे बढ़ती है।

बोध प्रश्न 1

i) पेरेटो के अनुसार, अभिजन वर्ग के भीतर दो विभिन्न वर्ग कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) शक्तिशाली अभिजन किस प्रकार गैर–अभिजनों से गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) अभिजन वर्ग के भीतर जनसमूह की गतिशीलता के केंद्र में क्या होता है ?

–कड़ी मेहनत –समर्पण

–पैत्रिक स्थिति –योग्यता

6.2.1 अभिजनों के प्रकार

द सोशल साइंसेज इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार, अभिजनों की प्रकृति को पारंपरिक रूप से मुट्ठी भर लोगों के समूह के रूप में समझा जाता था, जो इन्हें कुछ विशेष प्रतिभाओं का स्वामित्व होने, किसी महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने या कुछ ऐतिहासिक ध्येय (मिशन) को पूरा करने के गुण के कारण समाज के बाकी हिस्सों से पृथक करता हैं। हालाँकि, नया दृष्टिकोण उन्हें समाज के किसी भी वर्ग के अभिशासन में प्रभावशाली हस्तियों के रूप में देखता है, चाहे वह संस्थागत ढांचा हो, परिवर्तित–स्थानीय समुदाय हो या फिर भौगोलिक क्षेत्र। और बोलचाल के ढंग से अभिजन वर्ग आमतौर पर नेताओं, प्रभावकों या निर्णय निर्माताओं के समान होते हैं।

वर्तमान में, आधुनिकता के आगमन के कारण, न केवल समाज के विभिन्न क्षेत्रों में, बल्कि शक्ति के विभेदित स्तर के साथ भी अभिजन वर्ग का उदय हुआ। इस प्रकार, समाज में लगभग किसी भी और हर क्षेत्र में कुलीन व्यक्ति हो सकते हैं– नौकरशाही अभिजन वर्ग, विधायिक अभिजन वर्ग, कुलीनतंत्र का अभिजन वर्ग, मीडिया अभिजन वर्ग, शैक्षिक अभिजन वर्ग, वित्तीय अभिजन वर्ग, आरोपित अभिजन वर्ग या साख वाले अभिजन वर्ग। अतः इस खंड में हम, और अधिक विस्तार से, तीन अलग–अलग प्रकार के अभिजनों का अन्वेषण करेंगे, जो मूल रूप से व्यापक श्रेणियां हैं, जिससे ये विभिन्न प्रकार के उल्लेखित अभिजन वर्ग सम्बंधित है।

1. शासक अभिजन

यह श्रेणी सर्वप्रथम पेरेटो द्वारा प्रस्तावित की गयी थी। उनके अनुसार, हालांकि कुछ व्यक्ति अपनी क्षमताओं में श्रेष्ठ होते हैं, और दूसरे अपने गुणों के कारण उनसे हीन रह जाते हैं – इस प्रकार, वे गैर–अभिजन वर्ग हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति उसके लिए "अभिजन" हैं। वे समाज में इनके कार्यों के आधार पर इन अभिजन वर्गों को दो शाखाओं में विभाजित करतें है– शासी या शासक वर्ग; और गैर–शासी अभिजन वर्ग। जैसा कि नाम से पता चलता है, शासी अभिजन वर्ग, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, सरकार और इसकी राजनीतिक प्रक्रियाओं के कामकाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब, शासक अभिजन वर्ग दो प्रकार के हैं – लोमड़ी और शेर। लोमड़ियाँ वे हैं जो धूर्तता, छल और धोखेबाजी के गुणों के द्वारा शासन करते है। दूसरी ओर, शेर वे हैं जो सजातीयता, छोटे नौकरशाहों, स्थापित मानदंडों और केंद्रीकृत प्रक्रियाओं के माध्यम से शासन करते हैं। इस प्रकार, शेर लोमड़ियों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक रूढ़िवादी हैं। आपके लिए, इन द्विभाजन को बेहतर ढंग से समझने के लिए, एक चित्र नीचे दिया गया है।

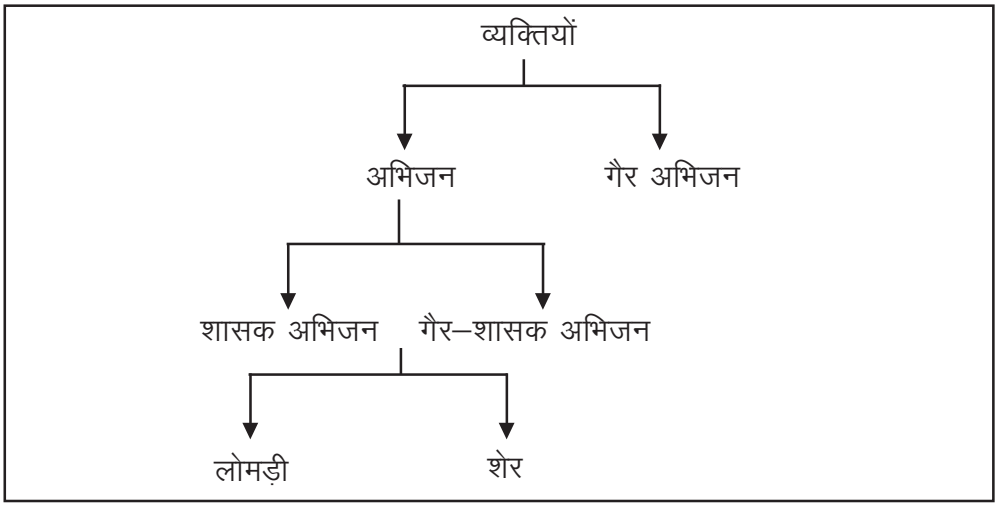

पेरेटो के अनुसार, इतिहास शेरों और लोमड़ियों के बीच सत्ता का पेंडुलम की भांति हस्तांतरण है। इसे समझाने के लिए, उन्होंने "अभिजनों के परिसंचरण" के विचार को प्रस्तावित किया। इसमें उन्होंने दो तरीके सुझाए जिसमें किसी समाज विशेष में शासक अभिजन वर्ग गतिशील रहते हैं, न कि स्थिर, जिसमें एक का क्षय दूसरे के उदय का मार्ग प्रशस्त करता है। सर्वप्रथम, उनके अनुसार, यह समाज के अभिजन और गैर–अभिजन वर्ग के बीच व्यक्तियों का परिसंचरण है। शासक अभिजन वर्ग को तब प्रतिस्थापित किया जाता है, जब गैर–शासक वर्ग के लोग इनके वर्ग में घुसपैठ करना शुरू कर देते हैं .. दूसरा, अभिजनों का परिसंचरण अभिजातों के एक समूह का दुसरे समूह द्वारा प्रतिस्थापन सुनिश्चित कर सकता है, जब तक बाद के (परवर्ती) समूह अपने गुणों पर अधिकार कर वृद्धि करें, जो कि शासक अभिजन वर्ग के लिए आधारभूत विशेषताएं हैं तब तक पूर्ववर्ती के समूह में इन विशेषताओं के पतन के संकेत दिखाई देने लगते है। इस प्रकार, शीर्ष पर शासक वर्ग के साथ अभिजनतंत्र नहीं टिकता हैं।

2 आर्थिक अभिजन वर्ग

जेम्स बर्नहैम ने अभिजनवाद को परिभाषित करने के लिए आर्थिक दृष्टिकोण को अपनाया, जिसमें शक्ति को पहचान के एक माध्यम के रूप में देखा गया है कि कौन अभिजन वर्ग है और कौन नहीं। इस गतिविधि में, अभिजन वर्ग उत्पादन और वितरण के साधनों पर अपने नियंत्रण के स्तर के अनुसार अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं। यह शक्ति उन्हें सामाजिक वर्णक्रम के दूसरे छोर पर स्थित, उत्पादन या वितरण के साधनों तक पहुंच न रखने वाले लोगों की तुलना में समाज में प्रभावशाली स्थान देती है। इस समझ के अनुसार, यह पता लगाने का सबसे आसन तरीका कि समाज का प्रभावी अभिजन वर्ग या शासक समूह कौन है, यह अन्वेषण करना है कि किस समूह को अधिकतम आय प्राप्त होती है। समाज में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए, पहले व्यक्ति के पास आर्थिक शक्ति होनी चाहिए, क्योंकि राजनीतिक शक्ति भी आर्थिक नियंत्रण होने से प्रवाहित होती है। इस मामले की पुष्टि करने के लिए, वे पूंजीवाद का एक उदाहरण प्रस्तुत करतें है। इसमें, वे तर्क देतें है कि पूंजीवाद धीरे–धीरे एक आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा, जिसे प्रबंधकीय अभिजन वर्ग द्वारा चलाया जाएगा, क्योंकि पूंजीपतियों ने अपने व्यवसाय का नियंत्रण उन लोगों को हस्तांतरित कर दिया है जो पेशेवर प्रबंधकों को रखने की क्षमता रखते है। यह एक प्रबंधकीय क्रांति के परिणामस्वरूप हो सकता है, जिसमें राज्य के समर्थन प्रबंधक और नौकरशाह के कारण विनिमय योग्य हो जाएगा।

3 शक्तिशाली अभिजन

बर्नहैम द्वारा व्याख्यायित अभिजन वर्ग की शक्ति के विशुद्ध आर्थिक आधार को आगे बढ़ाते हुए, सी. राइट मिल्स ने आगे जोड़ते हुए कहा कि यह केवल आर्थिक शक्ति नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक प्रतिपक्ष भी है, जो एक दिए गए समाज में अभिजन वर्ग का आधार बनाने के लिए एक साथ जुड़ते हैं। अतः, उनके लिए शक्तिशाली अभिजन वे हैं जिन्होंने संस्थानों में सर्वोच्च पदों पर कब्जा किया हुआ हैं। वही शक्तिशाली अभिजन वर्ग राजनीतिक क्षेत्र या सरकार में भी सत्ता के प्रमुख पदों पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लेते है। यहां, मिल्स के अनुसार, संस्थान सामरिक पदानुक्रम हैं, जिसमें वैधता के स्रोतों पर अधिकार करने की तुलना में अभिजनवाद पर अधिकार करने के लिए शक्ति और नियम महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार, उनके संस्थागत शक्ति दृष्टिकोण के अनुसार, शक्ति का स्रोत किसी व्यक्ति या विशेष वर्ग के पास नहीं, अपितु संस्था के पास निहित है।

एक संस्था से प्रवाहित होने वाली शक्ति, समकालीन समाज में अभिजन वर्ग के स्तर,

स्थिति, प्रभाव और अधिकार निर्धारित करती है। उस शक्ति के साथ जो कि एक संस्थान कुलीन वर्ग को प्रदान करती है, वे दूसरों की भूमिका निर्धारित करने की स्थिति में आ जाते हैं – इन दूसरों में मध्य वर्ग और जनसमूह आते हैं। इस प्रकार, मिल्स ने सुझाव दिया कि यह जन्मजात लक्षण थे जो एक व्यक्ति को एक अभिजन बनाते हैं, बल्कि यह वह संस्था है जिसके साथ वह संबंधित है। अमेरिकी समाज की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि निगम, सैन्य और सरकार तीन ऐसे ही अभिजन संस्थान हैं। इन अभिजन संस्थानों के निर्णय निर्माता एक दूसरे की अभिजनसमूह को बनाए रखने और मजबूत करने के लिए एक दूसरे के साथ सामंजस्य के साथ काम करते हैं। अन्य समाजशास्त्री जी. विलियम डोमहॉफ के अभिजन वर्ग पर उनके काम को समझने के लिए कृपया नीचे दिए गए बॉक्स को पढ़ें।

बॉक्स 1. हू *रिअली रूल्स?* (1978)

डोमहॉफ के अनुसार, व्यावसायिक अभिजन वर्ग दोनों राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर भली प्रकार सुनियोजित हैं। उनके पास प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीकों से प्रभाव डालने की क्षमता है। वे विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका की पुनर्विकास नीतियों और शीर्ष व्यवसायों और उनकी सरकार के बीच संबंध के मामले की व्याख्या करतें है। इसमें, वे तर्क देते हैं कि सरकार उच्च वर्ग के हाथों में एक उपकरण है, जो कॉर्पोरेट अर्थव्यवस्था, मीडिया और संचार और नीति नियोजन संगठनों को नियंत्रित करता है। इस प्रकार, वे उच्च वर्ग के व्यापारी अभिजन वर्ग के साथ सत्तारूढ़ अभिजन वर्ग को समान मानते है,

उनके अनुसार "उच्च" बने रहना ही "शासन" में बने रहना है। डोमहॉफ शक्ति का एक त्रिपक्षीय विभाजन प्रदान करते है – प्रणालीगत, संरचनात्मक और स्थितिजन्य के रूप में। जो संस्थागत नीतियों से लाभान्वित होता है, उनके पास प्रणालीगत शक्तियां होती हैं, जो महत्वपूर्ण संस्थागत पदों को नियंत्रित करते है, उनके पास संरचनात्मक शक्ति होती है, और जो निर्णायक विवादों में जीततें है, उनमें स्थितिजन्य शक्ति सबसे अधिक होती है। ये तीन आयाम शक्ति के वर्ग, संस्थागत और निर्णायक आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सत्ता के तीन आयाम नीति निर्माण के तीन अनुवर्ती स्तरों की ओर संकेत करते हैं, जिसमें, प्रणालीगत शक्ति व्यापक मुद्दों पर प्रभुत्व रखती है, संरचनात्मक शक्ति ठोस नीति प्रस्तावों की ओर ले जाती है, और स्थितिजन्य शक्तियां विशिष्ट नीतियों के विवरणों का समाधान करती हैं।

बोध प्रश्नों के उत्तर 2

i) पेरेटो के अनुसार शासी या शासक अभिजन वर्ग के भीतर कौन सी दो श्रेणियां हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अभिजनों के संचलन के विचार को किसने प्रतिपादित किया? और उनका इससे क्या अभिप्राय है?

– विलफ्रेडो पेरेटो – सी. राइट मिल्स

– जी. विलियम डोमहॉफ – जेम्स बर्नहैम

.....

.....

.....

iii) पूंजीवाद कैसे प्रबंधकीय अभिजनों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) शक्तिशाली अभिजन कौन हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 संस्कृति : अभिजन वर्ग की सामाजिक स्थिति का एक चिन्हक

पियरे बॉर्दियू अपने उत्कृष्ट कार्य *डिस्टिंक्शन* (1984) के माध्यम से, संस्कृति और इसकी विशेषताओं का अभिजनवाद के विचार के आधार के रूप में समीक्षा करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उनके अनुसार, सांस्कृतिक विस्थापन, अभिजन वर्ग की प्रस्थिति के सार्थक चिन्हक हैं। संस्कृति केवल एक व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति को दर्शाने का साधन मात्र नहीं है, अपितु यह वास्तव में इसे बनाने में व्यक्ति की मदद भी करता है। इस संबंध में संस्कृति, दो कार्य करती है – सबसे पहला, यह एक व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने में मदद करती है; और दूसरा, यह एक सीमा बनाती है, जो स्वयं के और दूसरों के निर्माण की ओर ले जाने का नेतृत्व करती है ।

सोचे और करें 2

अपने माता–पिता / दादा–दादी या परिवार के अन्य बुजुर्गों से बात करें और सांस्कृतिक क्षेत्र के विशिष्ट लक्षणों की सूची तैयार करें, जिनसे आप संबंध रखते हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र आपकी सामाजिक अवस्थिति – आपकी जाति, वर्ग, धर्म, जातीयता और यहां तक कि लिंग से भी आकार पाता है। यदि संभव हो तो केंद्र में अपने सह–शिक्षार्थियों के साथ अपनी सूची की तुलना करें और यह समझने की कोशिश करें कि आपकी सांस्कृतिक विशिष्टता दूसरों की तुलना में आपकी स्थिति को किस प्रकार प्रभावित करती है।

इस समझ के अनुसार, दिए गए समाज में अभिजन वर्ग का निर्माण "सांस्कृतिक पदानुक्रम" पर निर्भर करता है। अभिजन अपने वर्ग, जातीयता, धर्म और लैंगिक सहित अपने सामाजिक और सांस्कृतिक स्थानों का उपयोग करते हैं, ताकि उनके मूल्यों और जीवन शैली का एक विशेष आस्वादन विकसित हो सके जो उन्हें गैर–अभिजन वर्ग से अलग करता है। इस विचार का अधिकांश भाग बॉर्दियू के "सांस्कृतिक पूंजी" की अवधारणा पर आधारित है। यह इस बात पर जोर देता है कि जैसे आर्थिक पूंजी किसी व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है और उसे एक आर्थिक अभिजन बनाती है, ठीक उसी तरह, संस्कृति जब पूंजी के रूप में देखी जाती है, तो वह व्यक्ति को दूसरों की तुलना में सांस्कृतिक रूप से अधिक सक्षम बनाती है। इसे देखते हुए, सांस्कृतिक पूंजी जीवन के अवसरों को प्रभावित करती है। यह किसी व्यक्ति की जीवन शैली, शिक्षा प्राप्ति, वैवाहिक चयन, कैरियर विकल्प और यहां तक कि सामान्य पसंद और नापसंद पर एक महत्वपूर्ण असर डालती है।

आइए इस कथन को पश्चिमी संदर्भ में संगीत के एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के माध्यम से, अभिजन वर्ग और जनसमूह की पसंद और नापसंद या रूचि के बीच बहुत अंतर नहीं था। बाद में, इस प्रवृत्ति में बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में एक तीव्र बदलाव देखा गया। स्वयं और जनसमूह के बीच एक अंतर बनाने के प्रयास में अभिजन वर्ग ने अच्छे संगीत जैसे शास्त्रीय और ओपेरा की अपनी रूचि को पसंद में परिवर्तित करना प्रारंभ कर दिया। वे निम्न बौद्धिक जनसमूह से बिलकुल विपरीत उच्च सांस्कृतिक और बौद्धिक रूचि वाले वर्ग बन गए। लेकिन इस प्रवृत्ति में फिर से बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान एक बदलाव देखा गया, जब सांस्कृतिक अभिजन वर्ग की रूचि शास्त्रीय, जैज़, विश्व संगीत और हिप हॉप का मिश्रण अधिक हो गई।

अस्पष्टता का यह उभरता रुझान, जैसा कि अभिजन वर्ग के संगीत की रूचि के उदाहरण द्वारा दिखाया गया है, उनके और जनसमूह के बीच की सीमाओं को धूमिल करने की ओर संकेत करता है, जिसमें उनकी गैर–विशिष्ट सांस्कृतिक रूचि और जीवन के तरीकों को अपनाकर अभिजन वर्ग में सम्मिलित हो जाना जनसमूह के लिए कोई दूर की कौड़ी नहीं है।

बोध प्रश्न 3

i) अभिजन बनाम जनसमूह के विमर्श में संस्कृति के विचार को किसने प्रस्तावित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अभिजनवाद को परिभाषित करने में संस्कृति द्वारा निभाई गई दो भूमिकाएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) "सांस्कृतिक पूंजी" का बॉर्दियूवादी विचार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

iv) अभिजन वर्ग और जनसमूह के बीच की सीमाएं कैसे बदल रही हैं? संगीत के उदाहरण के माध्यम से समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 सामाजिक संजाल और ज्ञानः अभिजन वर्ग का संरक्षण

जैसा कि प्राचीन ज्ञान बताता है, दूसरों के साथ संबंध संसाधनों का कार्य करते हैं। अभिजन वर्ग अल्पसंख्यक हो सकता है, लेकिन एक दूसरे के साथ उनके संबंधों या संजाल का घनत्व उनके सामूहिक हितों के लिए समन्वित कार्यों के उत्पादन में एक लंबा साथ निभाता है। इस प्रकार के सह–संबंध सूचनाओं के हस्तांतरण को सुगम बनाते हैं, जो उनके सामान्य अनुभवों के आधार पर समन्वित कार्यों के उत्पादन में मदद करता है।

सामाजिक संजाल मूल रूप से एक व्यक्ति को सहभागित जीवन के अवसरों और हितों के साथ समुदाय से जोड़ने वाले संबंधों की संरचना है। चाहे वह व्यक्ति हों, संगठन हों या राष्ट्र हों, सूक्ष्म या वृहद स्तर पर सभी सामाजिक कार्यकर्ता दूसरों के सुझाव, सलाह, सूचना या संसाधनों को साँझा करके, समर्थन और आलोचनाओं के साथ अपने रोजमर्रा के व्यवहार का निर्माण करते हैं। किसी के सामाजिक संजाल के भीतर इस तरह की परस्पर क्रिया, उसके कार्यों, व्यवहार, विचारों और मान्यताओं को प्रभावित करती है; जो अभिजनवाद के गुणों को सदृढ़ करती है।

किसी भी समाज में व्यक्ति सामाजिक समन्वयात्मक होता हैं। वे न तो अपने अस्तित्व के लिए अपने सामाजिक संजाल पर पूरी तरह से निर्भर हैं, और न ही वे पूरी तरह से अप्रभावित या तर्कसंगत हैं। सामाजिक संजाल के केंद्र में सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक दूसरे पर परस्पर–निर्भरता निहित होती है। उनकी परस्पर–क्रियाओं को समझकर उनकी संस्कृति, समुदाय, संस्था या समाज के संदर्भ को निकाला जा सकता है। लेकिन जिस तरह सांस्कृतिक, आर्थिक या स्वयम शक्तिशाली अभिजन वर्ग की स्थिति के मामले में भी, यहाँ तक कि अभिजन वर्ग के सामाजिक संजाल गतिशील रहते हैं, न कि स्थिर। ऐसे संजाल की संरचना और सदस्यता परिवर्तन के अधीन है और ऐसा तब होता है जब समाज के गैर अभिजन वर्ग के सदस्य ऊर्ध्वगामी गतिशीलता प्राप्त करते हैं।

अभिजन प्रस्थिति के संरक्षण में, ज्ञान और विचारधारा सामाजिक संजाल के सममूल्य भूमिका निभाते हैं। अब यह महत्व ग्रामसी के "हेजिमनी" के विचार के बाद, अभिजनवाद पर अध्ययन में ज्ञान से जुड़ा था। एंटोनियो ग्रामसी की पुस्तक *सलेक्शन्स फ्रॉम दा प्रिजन नोटबुक्स* (1971) यह प्रस्तावित करती है कि शासक वर्ग बल द्वारा शासन नहीं करता है; बल्कि वे अपने सांस्कृतिक ज्ञान के नैतिक सद्‌गुण के आधार पर शासन करते हैं। उनके अनुसार, वे अपने सांस्कृतिक ज्ञान का उपयोग शासक के हितों की आड़ में अपने हितों को नियंत्रित करने के लिए एक उपकरण के रूप में करते हैं।

सांस्कृतिक ज्ञान से सशक्त वे शासितों को शासकों के मूल्यों को साँझा करने या अपनाने के लिए सहमत करते हैं। अतः उदाहरण के लिए, अभिजन वर्ग अपने सांस्कृतिक ज्ञान के उपयोग द्वारा एक विशेष राजनीतिक विचारधारा की सदस्यता लेने के लिए जनसमूह को संगठित करते हैं। अभी तक अन्य स्तर पर, अभिजन वर्ग के समतुल्य बुद्धिजीवियों के उदय होने के साथ ही, ज्ञान स्वयम ही सामाजिक स्थिति का संकेतक बन जाता है। उनकी व्यावसायिकता और सामाजिक–सांस्कृतिक पूंजी के साथ–साथ उनकी योग्यता उनकी सामाजिक स्थिति या वर्ग के अभ्युदय में सहायक होती है।

सोचें और करें 3

अपने चारों ओर देखो। अपने आस–पास काम करने वाले सामाजिक संजाल का निरीक्षण करें। वे आपके अपने संजाल या आपके सन्निकट वातावरण में हो सकते हैं। यह आपकी समझ को समृद्ध करेगा कि वास्तविक जीवन में सामाजिक नेटवर्क कैसे संचालित होते हैं। यदि संभव हो तो अपने निरीक्षणों पर एक प्रस्तुति बनाएं और अपने केंद्र पर अपने दोस्तों के सामाजिक संजाल के भीतर उसे प्रस्तुत करें और एक–दूसरे के अनुभवों से सीखें।

बोध प्रश्न 4

i) सामाजिक संजाल क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) सामाजिक संजाल अभिजन वर्ग की स्थिति के संरक्षण में कैसे मदद करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) समाजशास्त्र में "हेजिमनी" (आधिपत्य) की अवधारणा किसने दी?

– सी. राइट मिल्स – विलफ्रेडो पेरेटो

– एंटोनियो ग्राम्स्की – कार्ल मार्क्स

.....

.....

.....

.....

.....

iv) जनसमूह पर अभिजन वर्ग के आधिपत्य को बनाए रखने में सांस्कृतिक ज्ञान कैसे सहायता करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

v) ज्ञान सामाजिक स्थिति का सूचक कब बनता है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 सामाजिक संस्थाएँ: अभिजनों का पुनरुत्पादन

अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन की प्रक्रिया में, सामाजिक संस्थानों की भूमिका लगभग उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पारिवारिक स्थिति का वंशानुक्रम। हालांकि, पारिवारिक वंशानुक्रम

सामाजिक संस्था के चयन में एक निर्णायक कारक बना रहता है, चाहे वह शैक्षणिक संस्थान हो या सामाजिक संघ हो जिसके साथ अभिजन वर्ग जुड़ना पसंद करते हैं। सामाजिक संघ पहले स्थान पर एक अभिजन वर्ग का निर्माण करके और दुसरे स्थान पर सामाजिक शक्ति से गैर–अभिजन वर्ग के लोगों को पृथक कर एक दोहरे उद्देश्य को प्रस्तुत करते हैं। ऐसे संघों को सामाजिक रूप से नए संपन्नों के उदय के खिलाफ एक अगुआ के रूप में समझा जाता है। गैर–अभिजन वर्ग के लोगों की आर्थिक गतिशीलता में वृद्धि के साथ, पारिवारिक अभिजन खतरा महसूस करतें है। इस तरह के विकास की पृष्ठभूमि में अभिजन संघों की लोकप्रियता और भी अधिक बढ़ जाती है और इसलिए उनका बहिष्करण उस चीज से होता है जिसे वे 'अन्य' के रूप में देखते हैं।

अभिजन क्लब में शामिल हो रहे नए अभिजन पुराने अभिजनों के साथ अपने हितों के समन्वय में कुशलतापूर्वक व्यव्हार करते है। इस प्रकार, समान हितों और संस्कृति को साझा करके, वर्ग के संस्थापन का मार्ग प्रशस्त करते है। इस समझ के आधार पर, उच्च वर्ग के परिवारों में अभिजन वर्ग मजबूती से स्थापित हो जाते है, वे संघ जैसी संस्थाओं के माध्यम से मध्यस्थता करते हैं, और सामान्य हितों द्वारा संचालित होते हैं। जबकि संघ और परिवार अभिजनों को सामाजिक पाबन्दी का आधार प्रदान करते हैं, विद्यालय और विश्वविद्यालय जैसे शैक्षणिक संस्थान विशेष रूप से जटिल बने रहते हैं। एक तरफ, वे व्यक्ति के उत्थान की गतिशीलता के लिए एक श्रेष्ट प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, वहीं साथ ही वे सबसे अधिक प्रतिबंधकर्ता द्वारपालन संस्थान भी हो सकते हैं।

विद्यालयों की संख्या में वृद्धि और विद्यालयी शिक्षा के उनके प्रतिमान में बदलाव ने उन्हें अभिजनों के अध्ययन के लिए एक फलदायी आधार बना दिया है। स्कूल असमानताओं को मजबूत करने का एक तंत्र बन गए हैं, जिसमें कुलीन वर्ग के छात्रों का जन्मसिद्ध अधिकार उनके परिचय पत्र में बदल जाता है। यह सीधे तौर पर शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से अभिजनवाद के पुनरुत्पादन के तरीकों पर असर डालता है। शैक्षिक संस्थानों का तर्क सीधे संबंधपरक है और अभिजन वर्ग के अभिविन्यास से मेल खाता है। उदाहरण के लिए अभिजन बोर्डिंग विद्यालयों का मामला लीजिए। पुराने स्थापित अभिजन परिवारों ने नए संपन्नों, उद्योगपति और जनसमूह से खुद को वर्गीकृत करके अपनी सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाने के प्रयास की अपनी इच्छा के परिणामस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वे बहुत लोकप्रिय हो गए। इसलिए, सामाजिक संघों की तरह ही विद्यालय भी अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन का स्थल बन जाते हैं। यह समझने के लिए कि कैसे अभिजनवाद और विद्यालय एक–दूसरे से मेल खाते हैं, आइए हम भारत के मामले पर विचार करें।

नीचे दिए गए बॉक्स में पढ़ें।

बॉक्स 2. अभिजनवाद और विध्यालय : भारत के संदर्भ में

ब्रिटिश शासन के अंत में भारत में साक्षारता दर 12% दर्ज की गई थी। इसे भारत की खराब सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के प्रमुख संकेत के रूप में देखा गया था। शिक्षा ज्यादातर पारीवारिक अभिजनों तक सीमित थी, इस मानक आदर्श का बहुत अधिक उल्लंघन नहीं किया गया था। साथ ही, विद्यालयों की संख्या बहुत कम थी, औपनिवेशिक शासन काल में शिक्षा अभिजन वर्ग का विशेषाधिकार बन गया था। हालांकि स्वतंत्रता के बाद, योजना आयोग और कई शिक्षा समितियों के गठन के बाद, सभी समावेशी शिक्षा नीतियां लागू हुईं। इसने शिक्षा को अभिजन अल्पसंख्यकों के चंगुल से बाहर निकाला। भूमंडलीकरण और आधुनिकता के आने के बाद, शिक्षा के परिदृश्य ने एक बार फिर ऐतिहासिक बदलाव को देखा। एक स्तर पर, भारत वैश्विक शिक्षा प्रणाली की ओर अग्रसर

हुआ और दूसरी तरफ, शिक्षा की लागत बहुत अधिक हो गई है। विद्यालयों का चयन परिवार की आय के आधार पर अचानक बदल गई। विद्यालयों को भी समाज के वर्ग के अनुसार पदानुक्रम में व्यवस्थित कर दिया गया, जो अपने बच्चों को उन के पास भेजना वहन कर सकते थे। इसलिए, एक ओर जहां दून स्कूल, बिशप कॉटन और अन्य जैसे उच्च वर्ग के विद्यालय हैं जो पुराने कुलीन परिवारों की आवश्यकता को पूरा करते हैं मध्य स्तर पर अभी भी चिन्मय विद्यालय, दिल्ली पब्लिक स्कूल आदि जैसे उच्च वर्ग के विद्यालय हैं, जहाँ सिविल सेवकों या उच्च वर्ग के व्यापारियों के परिवारों से संबंधित छात्रों को प्रवेश मिलता है। निम्नतम स्तर पर मध्यम वर्ग के और निम्न वर्ग के लोग अभी भी राज्य प्रायोजित शैक्षणिक संस्थानों पर निर्भर हैं।

बोध प्रश्न 5

i) ऊपर किन दो सामाजिक संस्थाओं की चर्चा की गई है, उनका सीधा असर अभिजन वर्ग के पुनरुत्पादन पर पड़ता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अभिजन संजाल में सामाजिक संघों की प्रमुखता के लिए समाजशास्त्रीय तर्क क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) अभिजन वर्ग बनाम जनसमूह के अध्ययन के अनुसार शिक्षण संस्थानों को किस प्रकार की द्विभाजन का सामना करना पड़ रहा है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) अभिजन वर्ग अपनी स्थिति के पुनरुत्पादन के लिए विद्यालयों को उपयुक्त कैसे बनाते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 सारांश

कुलीन वर्ग और जनसमूह की परिभाषा एक से अधिक कारकों के अनुरूप भिन्न हो सकती है। ये उस समाज के खंड हो सकते हैं जिसमें वे स्थित हैं, या व्यवसाहिक क्षेत्र हो सकते है जिसे वे संचालित करते हैं। यह उनकी शैक्षिक योग्यता का स्तर हो सकता है, या फिर केवल उन परिवारों की जिसमें वे जन्म लेते हैं। संगीत, कला रंगमंच के लिए उनकी उच्च स्तरीय सांस्कृतिक और बौद्धिक रूचि या एक के बजाय दूसरे प्रकार के सामाजिक संघ के लिए उनकी प्राथमिकता हो सकती है। इसलिए, अभिजन वर्ग और जनसमूह की एक विलक्षण परिभाषा को इस प्रकार से परिणामित करना बहुत कठिन है। लेकिन, जो इन दो अवधारणाओं – अभिजन वर्ग और जनसमूह की समझ के केंद्रीय स्थित है, वह यह है कि इन दोनों को केवल एक दूसरे के उपप्रमेय के रूप में समझा जा सकता है। जनसमूह के बिना कोई अभिजन नहीं हो सकता है और बिना अभिजन जनसमूह नहीं हो सकती है। यह संसाधनों पर उनके नियंत्रण का परिणाम है जो यह तय करता है कि कौन अभिजन वर्ग है और कौन नहीं है।

जो राजनीतिक संसाधनों तक अपनी पहुंच के आधार पर हावी हैं, वे किसी दिए गए समाज के शासक बन जाते हैं। इस प्रकार, अल्पसंख्यक बहुसंख्यक जनसमूह पर शासन करते हैं। उत्पादन और वितरण के आर्थिक संसाधनों पर वर्चस्व रखने वाले लोग आर्थिक अभिजन वर्ग बन जाते हैं। ये फिर भी अल्पसंख्यक बने रहते हैं जो गैर–अभिजनों के बहुसंख्यक लोगों का शोषण करते हैं। और, फिर अन्य प्रकार के कुलीन वर्ग हैं जो राज्य, निगमों और सेना जैसे सत्ता के संस्थानों में उच्च स्थान रखते हैं, ये शक्तिशाली कुलीन हैं। लेकिन, सभी अभिजनों के समान होने के पीछे जो एक सामान्य तथ्य बना हुआ है वह यह है कि वे किसी भी समाज में अल्पसंख्यक हैं, फिर भी वे महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संसाधनों पर सबसे अधिक वर्चस्व रखते हैं।

अभिजन अपनी सांस्कृतिक पूंजी, सामाजिक संजाल और शिक्षा को अपने स्तर के संरक्षक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करते हुए, गैर अभिजन वर्ग से अपनी विशिष्टता बनाए रखते हैं। इसके अलावा, वे शिक्षा और अवकाश के सामाजिक संस्थानों – शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक संघों पर क्रमशः नियंत्रण के इस्तेमाल द्वारा, अपनी स्थिति के पुनरुत्पादन को सुनिश्चित करते हैं।

6.8 उपयोगी पुस्तकें

- बॉर्डियू, पियरे. (1984). डिसटिंग्शन. कैम्ब्रिज. एम.ए.रू हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

- डोमहॉफ, जी. डब्ल्यू. (1978). हू रिअली रूल्स?. न्यू यॉर्क. ट्रांसलेशन बुक्स
- ग्रामसी, एंटोनियो. (1971). सलेक्शन्स फ्रॉम दा प्रिजन नोटबुक्स. न्यू यॉर्क. आई एन टी
- मिल्स, सी. राइट. (1956). दा पॉवर इलीट. ऑक्सफोडर्स ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
- पेरेटो, विलफ्रेडो। (1935)। द माइंड एंड सोसाइटी। लंदनरू जोनथन केप

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) शासी और गैर–शासी अभिजन वर्ग।

ii) अभिजन वर्ग के व्यक्तियों में सामान्य सामाजिक मूल होता है और वे गैर–अभिजन वर्ग या जनसमूह से गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए अपने संबंध बनाए रखते हैं। अभिजन एक जोड़नेवाली इकाई की तरह काम करते हैं, जिसमें वे एक दूसरे को स्वीकार करते हैं और समझते हैं, और यहां तक कि एक जैसा सोचते हैं।

iii) योग्यता।

बोध प्रश्न 2

i) लोमड़ी और शेर

ii) विलफ्रेडो पेरेटो ने "अभिजनों के परिसंचरण" के विचार को प्रस्तावित किया। इसमें उन्होंने दो तरीके सुझाए जिसमें किसी दिए गए समाज में शासक अभिजन वर्ग गतिशील रहते हैं, न कि स्थिर, जिसमें एक का क्षय दूसरे के उदय का मार्ग प्रशस्त करता है। सर्वप्रथम, उनके अनुसार, यह समाज के अभिजन और गैर–अभिजन वर्ग के बीच व्यक्तियों का परिसंचरण है। शासक अभिजन वर्ग को तब प्रतिस्थापित कर किया जाता है, जब गैर–शासक वर्ग के लोग इनके वर्ग में घुसपैठ करना शरू कर देते हैं .. दूसरा, अभिजनों का परिसंचरण अभिजतों के एक समूह का दुसरे समूह द्वारा प्रतिस्थापन सुनिश्चित कर सकता है, जब तक बाद के समूह अपने गुणों पर अधिकार कर वृद्धि करें, जो कि शासक अभिजन वर्ग के लिए आधारभूत विशेषताएं हैं तब तक पूर्व के समूह में इन विशेषताओं के पतन के संकेत दिखाई देने लगते है।

iii) पूंजीवाद धीरे–धीरे एक आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा, जिसे प्रबंधकीय अभिजन वर्ग द्वारा चलाया जाएगा, क्योंकि पूंजीपतियों ने अपने व्यवसाय का नियंत्रण उन लोगों को हस्तांतरित कर दिया है जो पेशेवर प्रबंधकों को रखने की क्षमता रखते है।

iv) शक्तिशाली अभिजन वे हैं जिन्होंने संस्थानों में सर्वोच्च पदों पर कब्जा किया हुआ हैं। वही शक्तिशाली अभिजन वर्ग राजनीतिक क्षेत्र या सरकार में भी सत्ता के प्रमुख पदों पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लेते है।

बोध प्रश्न 3

i) पियरे बॉर्दियू अपने उत्कृष्ट कार्य डिस्टिंक्शन (1984) के माध्यम से।

ii) पहला, यह एक व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने में मदद करती है; और दूसरा, यह

एक सीमा बनाती है, जो स्वयं के और दूसरों के निर्माण की ओर ले जाने का नेतृत्व करती है ।

iii) जैसे आर्थिक पूंजी किसी व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है और उसे एक आर्थिक अभिजन बनाती है, ठीक उसी तरह, संस्कृति जब पूंजी के रूप में देखी जाती है, तो वह व्यक्ति को दूसरों की तुलना में सांस्तिक रूप से अधिक सक्षम बनाती है। इसे देखते हुए, सांस्कृतिक पूंजी जीवन के अवसरों को प्रभावित करती है। यह किसी व्यक्ति की जीवन शैली, शिक्षा प्राप्ति, वैवाहिक चयन, कैरियर विकल्प और यहां तक कि सामान्य पसंद और नापसंद पर एक महत्वपूर्ण असर डालती है।

iv) उन्नीसवीं शताब्दी के माध्यम से, अभिजन वर्ग और जनसमूह की पसंद और नापसंद या रूचि के बीच बहुत अंतर नहीं था। बाद में, इस प्रवृत्ति में बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में एक तीव्र बदलाव देखा गया। स्वयं और जनसमूह के बीच एक अंतर बनाने के प्रयास में अभिजन वर्ग ने अच्छे संगीत जैसे शास्त्रीय और ओपेरा की अपनी रूचि को पसंद में परिवर्तित करना प्रारंभ कर दिया। वे निम्न बौद्धिक जनसमूह से बिलकुल विपरीत उच्च सांस्कृतिक और बौद्धिक रूचि वाले वर्ग बन गए। लेकिन इस प्रवृत्ति में फिर से बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान एक बदलाव देखा गया, जब सांस्कृतिक अभिजन वर्ग की रूचि शास्त्रीय, जैज, विश्व संगीत और हिप हॉप का मिश्रण अधिक हो गई।

बोध प्रश्न 4

i) सामाजिक संजाल मूल रूप से एक व्यक्ति को सहभाजित जीवन के अवसरों और हितों के साथ समुदाय से जोड़ने वाले संबंधों की संरचना है।

ii) चाहे वह व्यक्ति हों, संगठन हों या राष्ट्र हों, सूक्ष्म या वृहद स्तर पर सभी सामाजिक कार्यकर्ता दूसरों के सुझाव, सलाह, सूचना या संसाधनों को साँझा करके, समर्थन और आलोचनाओं के साथ अपने रोजमर्रा के जीवन का निर्माण करते हैं। किसी के सामाजिक संजाल के भीतर इस तरह की परस्पर क्रिया, उसके कार्यों, व्यवहार, विचारों और मान्यताओं को प्रभावित करती हैय जो अभिजनवाद के गुणों को सदृढ़ करती है।

iii) एंटोनियो ग्रामसी

iv) सांस्कृतिक ज्ञान से सशक्त वे शासितों को शासकों के मूल्यों को साँझा करने या अपनाने के लिए सहमत करते हैं। अतः उदाहरण के लिए; अभिजन वर्ग अपने सांस्कृतिक ज्ञान के उपयोग द्वारा एक विशेष राजनीतिक विचारधारा की सदस्यता लेने के लिए जनसमूह को संगठित करते हैं।

v) अभिजन वर्ग के समतुल्य बुद्धिजीवियों के उदय होने के साथ ही, ज्ञान स्वयम ही सामाजिक स्थिति का संकेतक बन जाता है। उनकी व्यावसायिकता और सामाजिक–सांस्कृतिक पूंजी के साथ–साथ उनकी योग्यता उनकी सामाजिक स्थिति या वर्ग के अभ्युदय में सहायक होती है।

बोध प्रश्न 5

i) सामाजिक संघ और शैक्षिक संस्थान

ii) ऐसे संघों को सामाजिक रूप से नए संपन्नों के उदय के खिलाफ एक अगुआ के रूप

में समझा जाता है। गैर–अभिजन वर्ग के लोगों की आर्थिक गतिशीलता में वृद्धि के साथ, पारिवारिक अभिजन खतरा महसूस करतें है। इस तरह के विकास की पृष्ठभूमि में अभिजन संघों की लोकप्रियता और भी अधिक बढ़ जाती है; और इसलिए उनका बहिष्करण उस चीज से होता है जिसे वे 'अन्य' के रूप में देखते हैं।

iii) एक तरफ, वे व्यक्ति के उत्थान की गतिशीलता के लिए एक श्रेष्ट प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, वहीं साथ ही वे सबसे अधिक प्रतिबंधकर्ता द्वारपालन संस्थान भी हो सकते हैं।

iv) नए संपन्नों, उद्योगपति और जनसमूह से खुद को वर्गी.त करके अपनी सांस्.तिक पहचान को बढ़ाने के लिए विद्यालयों को उपयुक्त बनातें हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY